दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 17.11.2019

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

आज महाविद्यालय में छात्र परिषद एवं छात्र सेवा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में **युगपुरूष महंत दिग्विजयनाथ** जी की **१२५वी जयंती वर्ष एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संगोष्ठी** में **'स्वातन्त्र समर एवं महंत दिग्विजयनाथ'** विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए **डॉ. ओम जी उपाध्याय, निदेशक (शोध एवं प्रशासन)**, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज न केवल राष्ट्रवादी चेतना के अग्रदूत थे बल्कि स्वातंत्र समर के भी एक संत सेनानी थे, जो भारत की राष्ट्रीयता तथा अखण्ड भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए आजीवन कटिबद्ध थे। गोरखपुर के परिक्षेत्र में इनका उदय तब हुआ जब भारत केवल अंग्रेजो की राजनीतिक गुलामी ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और शैक्षिक सभी प्रकार की गुलामियों से जकड़ा था। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में किसानों, आदिवासियों ने अंग्रेजो के इस दासता के विरोध में क्रांति करना प्रारंभ किया। उसी कालखण्ड में राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, एनी बेसेंट, विवेकानन्द तथा राधाकान्त देव के नेतृत्व में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धारा प्रवाहित होनी प्रारंभ हुयी और इसी मध्य गोरखपुर जैसे पिछड़े क्षेत्र में क्रांति वीर संत महंत दिग्विजयनाथ का अभ्युदय होता है, जो अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात 1921 में गांधी के विचारों से प्रभावित होकर, राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े तथा अंग्रेजो के विरूद्ध असहयोग और खिलाफत आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। फरवरी 1922 में चौरी–चौरा के क्षेत्र की जनता ने विरोध स्वरूप शराब की दूकाने बंद करायी, ताड़ के पेड़ो को कटवाया तथा विदेशी कपड़ो की होली जलायी, जिसकी चरम परिणती चौरी–चौरा काण्ड की घटना के रूप में हुई, जिसमें महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज को 19 माह तक बंदी के रूप में रखा गया। किन्तु बाद में शिनाख्त के अभाव में मुक्त कर दिया गया। 1920 से लगभग 1934 तक इनका जुड़ाव कांग्रेस के साथ था तथा इन्होने महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी बढ़चढकर हिस्सा लिया। लेकिन बाद में इन्होने कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण उससे त्यागपत्र दे दिया। क्योंकि इनका मानना था कि काग्रेंस की नीतिया हिन्दू धर्म को आघात पहुॅचा सकती हैं। इसीलिए उन्होने अपनी साधना को समाज सापेक्ष मानकर, कार्य करना प्रारंभ किया। वीर सावरकर तथा भाई परमानंद के हिन्दू राष्ट्र की विचारधारा से प्रभावित होकर इन्होने हिन्दू महासभा की सदस्यता ग्रहण की और

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

लम्बे समय तक इसके महत्वपूर्ण पदों पर रहे। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में इनकी सक्रिय भूमिका रही और उसमें भी इन्हे बंदी बनाया गया। लेकिन उससे भी ये मुक्त हो गयें। महाराज जी भारत विभाजन के प्रबल विरोधी थे। गांधी के हत्या के मामले में भी इन पर आरोप लगे। गोरक्षपीठ की चल–अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गई, लेकिन इससे भी इन्हे दोषमुक्त कर दिया गया। फिर पूरी तरह इन्होने अपना जीवन समाजसेवा में अर्पित किया और इनके स्वतंत्रता आंदोलन का सबसे मुख्य केन्द्र महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद हुआ, जिसकी नीव डालकर इन्होने शिक्षा, चिकित्सा, तथा भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना का दृढसंकल्प लिया तथा इसे स्वदेशी शिक्षा के मॉडल के रूप में महत्व दिया। जिसका मूल उद्देश्य था इस पिछड़े इलाके को शैक्षिक और राजनीतिक दृष्टि से जागरूक करते हुए उनमें राष्ट्रीय चेतना का भाव पैदा कर एक राष्ट्रभक्त भारतीय बनाना था।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में **महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के सदस्य श्री प्रमथनाथ मिश्र** ने कहा कि महाराज जी का शिक्षा परिषद की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य था, यहॉ अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता से इतना ओत–प्रोत कर दिया जाय कि वे अंग्रेजी मानसिकता तथा राजनीतिक गुलामी से मुक्त होकर अपने आप को एक नये भारत के निर्माण के लिए तैयार कर सकें। उन्होने यह भी कहा कि यह शिक्षकों का दायित्व है कि ऐसे महान क्रांतिकारी संत सैनिक के विचारों को अपने छात्रों में समाहित करने का प्रयास करें यही इनके प्रति सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह व उत्तरीय प्रदान कर सम्मानित किया। प्रस्ताविकी और संचालन का कार्य डॉ. राजशरण शाही ने तथा आभार ज्ञापन संगोष्ठी के संयोजक डॉ. रविन्द्र कुमार गंगवार ने किया।

कार्यक्रमें मुख्य रूप से प्रो. सुमीत्रा सिंह, डॉ. बी.एन. सिंह, डॉ. प्रदीप राव, डॉ. फूलचन्द गुप्ता, डॉ. सरिता सिंह, डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, पंकज कुमार, राधारानी पाण्डेय तथा शिक्षा परिषद से जुड़े हुए संस्थाओं के शिक्षकों सहित महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी व छात्र परिषद के पदाधिकारी मिथिलेश यादव, शुभम मिश्रा सहित छात्र व छात्रायें उपस्थित थे।

डॉ. मुरली मनोहर तिवारी
प्रभारी सूचना एवं जनसम्पर्क